भारतीय ज्ञान परंपरा और हिन्दी कविताओं में राष्ट्रबोध

डॉ. लालचंद सिन्हा

सहायक प्राध्यापक (हिंदी)
शासकीय नवीन महाविद्यालय ठेलकाडीह,
जिला –खैरागढ़–छुईखदान–गंडई (छ.ग.)

की–वर्ड्स : राष्ट्र, राष्ट्रबोध,राष्ट्रीय चेतना, उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध, सामाजिक पुनर्जागरण, युग प्रवर्तक कवि भारतेंदु हरिश्चंद्र, गौरवपूर्ण अतीत का स्मरण, अंग्रेजी राज, अन्याय,शोषण,दमन और लूट, समाज सुधार, स्वदेशी आंदोलन, शोषक अन्यायी अंग्रेजी शासन का प्रतिरोध,हिन्दी भाषा प्रेम, सांस्कृतिक उत्थान, ब्रिटिश सरकार, भारत दुर्दशा, क्रांतिकारी भाव, मातृभूमि की वंदना, आजादी, स्वातंत्र्य समर, मुक्ति की आकांक्षा,बलिपंथी ।

'राष्ट्र' क्या है ?

प्राचीन वाङमय में यजुर्वेद में 'राष्ट्र' को इस प्रकार से अभिहित किया है– '' राजसंते चारू शब्दं कुर्वते जनः यस्मिन प्रदेशे विशेष तद् राष्ट्रम ।'' अर्थात् किसी प्रदेश के लोग एक विशिष्ट भाषा द्वारा जहाँ विचार–विनिमय करते हैं, वह स्थान विशेष राष्ट्र है।

स्टालिन के अनुसार – ''राष्ट्र वह समुदाय है जो ऐतिहासिक दृष्टि से विकसित और स्थायी होने के साथ सर्वमान्य भाषा, भू–भाग, आर्थिक जीवन और संस्कृति में परिलक्षित होने वाली विशेष मनोरचना से युक्त हो।''

राष्ट्रबोध के मूल में राष्ट्र और राष्ट्रीयता होती है। वेदों में राष्ट्रीयता की भावना मातृभूमि –स्तवन और देवों के कीर्तिगान में व्यक्त हुआ है। भारतीय मनीषियों के चिंतन में वसुधैव कुटुंबकम् की समष्टि भाव व्यापमान है। अथर्ववेद के मंत्रदाता ने धरती को माता और स्वयं को पुत्र माना है –' माता भूमिः पुत्रोऽहं पृथिव्याः'। अथर्ववेद के पृथ्वी सुक्त का प्रत्येक श्लोक राष्ट्रभक्ति से युक्त है । **राष्ट्रबोध** ऋग्वेद में इस प्रकार व्यक्त हुआ है –

'' यस्येमें हिमवंतो महित्वा, यस्य समुद्रं रसया सहाहुः।
यस्येमाः प्रदिशो यस्य बाहु, कस्मे देवाय हविषा विधेम।।''

बशीर अहमद मयूख ने उक्त श्लोक का भावप्रवणता के साथ निम्नवत काव्यानुवाद किया है– '' जिसके फैले बाहुपाश में,

आवेष्टित होने को दिशा–दिशान्तर।
उद्घोषित हो रहा समुद्रों के सीने में,
जिसके गौरव गीतों का संघोष निरंतर
हिममंडित पर्वत मालाएँ जिसे दे रहीं,
अभिनंदन का मौन समर्पण ।
उस स्वदेश के कर्म–यज्ञ में,
मेरी जीवन समिधा अर्पण।।''

साहित्यकार समाजजन्य परिस्थियों का भोक्ता होता है। वह अपने समाज और जीवन के समस्त ज्ञान और अनुभव का चेतना के स्तर पर साक्षात्कार कर कलात्मक अभिव्यक्ति प्रदान करता है। इस कारण अपनी सृजनात्मक अभिव्यक्ति के लिए समाजजन्य परिस्थियों का अवलंब ग्रहण करता है। इस प्रकार जहॉ साहित्यकार अपनी संवेदनात्मक अभिव्यक्ति के द्वारा समाज का बिम्ब प्रस्तुत करता है, वहीं दूसरी ओर अपनी सजग लेखनी के द्वारा समाज का मार्ग प्रशस्त भी करता है। इस प्रकार साहित्य और समाज एक दूसरे के प्रति अन्योन्याश्रित होता है। अतः साहित्य समाज का दर्पण होता है।

सन् 1857 की क्रांति के पश्चात हमारे देश का शासन ब्रिटिश शासन के अधीन हो गया। अंग्रेज व्यापारी से स्वामी बन गए। 1857 की क्रांति में भारतीयों को विफलता हाथ लगी किंतु उन्हें एकता का पाठ अवश्य पढ़ा गया।

उन्नीसवीं शताब्दी का उत्तरार्द्ध और बीसवीं शताब्दी का पूवार्द्ध संसार के इतिहास में महत्त्वपूर्ण स्थान रखता है। क्योंकि यह कालावधि अनेक परिवर्तनों को साथ लेकर चल रहा था। यह परिवर्तन साहित्य के क्षेत्र में भी हुआ। एक प्रसिद्ध कहावत है कि जब वीर सिपाही के हृदय में चोट लगती है तो किसी महायुद्ध की विभीषिका खड़ी होती है और साहित्यकार जब मर्माहत होता है तो किसी महान साहित्य का सृजन होता है। बंगाल अंग्रेजो का राजनीतिक केन्द्र था अतः स्वतंत्र्य चेतना का अंकुरण भी यही हुआ। बंकिमचंद्र चटर्जी द्वारा 1882 में रचित आनंदमठ का गीत 'वंदे मातरम्' नवीन स्फूर्ति का प्रतीक बन गया। यह स्वतंत्रता आंदोलन का बीज मंत्र बन गई। उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में सामाजिक पुनर्जागरण के महती उद्देश्यों से निर्मित ब्रह्म समाज, आर्य समाज, प्रार्थना समाज, रामकृष्ण मिशन जैसी संस्थाओं ने भारतीय जन मानस में आत्मगौरव की भावना को जीवित रखने में अत्यंत महत्त्पूर्ण योगदान दिया।

सामाजिक पुंनर्जागरण के क्षेत्र में जो स्थान राजाराममोहन राय का है , वहीं स्थान साहित्यिक क्षेत्र में बाबू हरिश्चंद्र का है। उन्होंने अपने समकालीन साहित्यकारों को यह मंत्र दिया कि '' निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल। बिनु निज भाषा ज्ञान के , मिटत न हिय को सूल।।'' भारतेंदु मण्डल के साहित्यकारों पर उनका यह मंत्र जादू सा कार्य किया। सन् 1857 के असफल विद्रोह के बाद अंग्रेजों के प्रति भारतीयों का दृष्टिकोण बदल गया। अंग्रेज सुनियोजित दमनचक्र फूट डालो और राज्य करो नीति से केन्द्रीय शक्ति को क्षीण कर दिया । देश पुराने उद्योग– धंधों को नष्ट कर जनता को आर्थिक रूप से पंगु बना दिया। ईसाई धर्म को प्रचार प्रसार कर हिन्दू धर्म और इस्लाम का धर्म का उपहास किया करते थे। और इसी कुत्सित स्वार्थ भाव से उनके द्वारा अंग्रेजी शिक्षा प्रारंभ की गई। हिन्दी के युग प्रवर्तक कवि भारतेंदु हरिश्चंद्र ने भारतदुर्दशा, अंधेर नगरी और भारत जननी जैसे नाटकों में गीतो के माध्यम से अंग्रेजों की स्वार्थपूर्ण कुटिल चालों से देशवासियों को सचेत करते हुए गौरवपूर्ण अतीत का स्मरण दिलाया है –

''रोवहु सब मिलि कै आवहु भारत भाई,हा–हा! भारत दुर्दशा न देखी जाई।
सबके पहिले जेहि ईश्वर धन बल दीनो ,सबके पहिले जेहि सभ्य विधाता कीनो।।''

अंगरेज राज सुख साज सजे सब भारी,
पै धन विदेस चलि जात इहै अति ख्वारी।। 1

हिन्दी साहित्य में द्वितीय भारतेंदु से विख्यात भारतेंदु मंडल के यशस्वी लेखक एवं कवि **पं. प्रतापनारायण मिश्र** ने भारतेंदु हरिश्चंद्र की विरासत को आगे बढाने का कार्य किया। मिश्रजी की कविताओं राष्ट्रीय चेतना की प्रखरता दिखाई पड़ती है। धनाभाव के बावजूद उन्होंने अंग्रेजी राज के विरूद्ध चेतना का स्फूरण करने तथा अपने देश–भाइयों का दुख सुख ज्यो का त्यों प्रकाश लाने हेतु उन्होंने 'ब्राह्मण' पत्रिका का प्रकाशन किया। अंग्रेजी शासन द्वारा अन्याय,शोषण,दमन और लूट का बेबाकी से पर्दाफाश करते हुए लिखते हैं –

'' लैसन,इनकम, चुंगी,चंदा,पुलिस, अदालत वरषा घाम,
सबके हाथन असन वसन जीवन संसयमय रहत मुदाम।
जो इनहूँ से प्रान बचै तो गोली बोलति धाय धड़ाम,
मृत्यु देवता नमस्कार, तुम सब प्रकार बस तृप्यंताम्।।'' 2

भारतेंदु मण्डल के सक्रिय रचनाकारों के रूप में **पं. बदरीनारायण चौधरी प्रेमघन** का नाम बहुत आदर से लिया जाता है। प्रेमघन की रचनाएँ राष्ट्रीय एवं सामाजिक जागरण से ओत प्रोत है। अंग्रेजों की अनीति और शोषण से भारत की जनता अन्न धन से हीन दयनीय हो गयी है। सारा उद्योग नष्ट होता जा रहा है। वे लिखते हैं –

'' मची है भारत में कैसी होली सब अनीति गति होली, पी प्रमाद मदिरा अधिकारी लाज शरम सब घोली। लगे दुसह अन्याय मचावत निरख प्रजा अति भोली, देश असेस अन्न धन उद्यम सारी संपत्ति ढोली।।'' 3

बालमुकुन्द गुप्त, जगमोहन सिंह, पं. अंबिकादत्त व्यास जैसे अन्य भारतेंदु मण्डल के अन्य कवियों ने राष्ट्रीय चेतना को अपना कवि धर्म माना। किसी देश का आत्मसम्मान परतंत्रता के मोह निद्रा में आखिर कब तक सो सकता है। गतिशील समय के साथ परतंत्रता असह्य हो गई। भारतेंदु युगीन कवियों ने सामाजिक और राष्ट्रीय चेतना के लिए जो अवदान दिया दिया है उसे विस्मृत नहीं किया जा सकता। इन रचनाकारों ने समाज सुधार, स्वदेशी आंदोलन, शोषक

अन्यायी अंग्रेजी शासन का प्रतिरोध,हिन्दी भाषा प्रेम, सांस्कृतिक उत्थान जैसे समसामयिक विषयों पर अपनी लेखनी चलाकर भारत की भोली भाली जनता की सुसुप्त चेतना को जगाने का कार्य किया।

प्रवाहमान समय के साथ हिंदी साहित्य की यात्रा में द्विवेदी युग भारतेंदु युग से एक कदम और आगे बढ़ा। भारतीय स्वाधीनता आंदोलन के इतिहास में द्विवेदी युग ही वह समय था जब देश के वीर सपूतों ने विदेशी साम्राज्य की दासता की श्रृंखला को विछन्न करने मातृभूमि के चरणों में अपना शीश अर्पण करने बलिदानी मार्ग प्रशस्त हो रहे थे। लोकमान्य तिलक का अमर घोष ' स्वराज्य हमारा जन्म सिद्ध अधिकार है' क्रांति का अमर घोष बन गया। गांधी जी के नेतृत्व में आततायी ब्रिटिश साम्राज्य को भस्मीभूत करने क्रांति की आग तीव्रता के साथ भड़क उठी। गांधीजी के नेतृत्व में असहयोग आंदोलन ने यह सिद्ध कर दिया कि स्वाधीनता आंदोलन को जन आंदोलन बन गया है। आजादी की इस क्रांतिकारी आग को शमित करने में ब्रिटिश शासन ने भी कोई कसर नहीं छोड़ी। इस समय संपूर्ण देश मानो कैदखाना बना हुआ था। रौलेट एक्ट, मार्शल ला, हत्या, लूट और बेगारी उनके अमानुषिक कृत्यों के खूनी हथियार थे।

हिन्दी के प्रथम राष्ट्रवादी कवि **पं. श्रीधर पाठक** थे। उन्होंने राष्ट्रीय चेतना से युक्त काव्य सृजन के माध्यम से भारतीय जन मानस को स्वाधीन भारत का स्वप्न दिखाकर नयी आकांक्षा जगायी। उनकी रचनाएँ स्वदेश भक्ति के साथ स्वतंत्रता और स्वराज की भावना से सराबोर है। ' जय हिन्द ' का कौमी नारा पाठक जी की रचना 'हिन्द वंदना' के माध्यम से लोगों के जुबान पर आया। राष्ट्रीय चेतना की भावना को तीव्र करने के उद्देश्य से पाठकजी ने अनेक राष्ट्रीय गीत भी लिखे। उनके 'भारत गीत' में संकलित सभी कविताएँ राष्ट्रीय चेतना से संपृक्त है । 'भारत गीत की निम्न पंक्तियां दृष्टव्य है –

''जय जय प्यारा भारत देश।जय जय प्यारा, जग से न्यारा,
शोभित सारा, देश हमारा ,जगत मुकुट जगदीश – दुलारा,
जय सौभाग्य – सुदेश।जय जय प्यारा भारत देश।'' 4

इस युग कवियों ने निःशंक होकर अपनी ओजमयी लेखनी से स्वराज का जयघोष किया और जन–जन में अपने क्रांतिकारी भावों को भर दिया। जिस प्रकार वाल्टेयर और रूसो की लेखनी ने क्रांति को जन्म दिया था, उसी प्रकार इस देश के कवियों ने विवश और लाचार जनता को अपनी तीव्र लेखनी से संबल प्रदान किया। ऐसे समय में ब्रिटिश सरकार मानों प्रतिबंधों का मूर्त रूप बन गई थी और विभिन्न प्रतिबंधों को हथियार के रूप में प्रयोग कर रही थी। वर्नाक्यूलर प्रेस एक्ट लागू कर राष्ट्रीय चेतना परक रचनाओं पर प्रतिबंध लगा दिया और रचनाकारों को कैद कर लिया। **रसिक जी** की ऐसे ही प्रतिबंधित कविता की पंक्तियॉ दृष्टव्य है –

''मातृभूमि को विपज्जाल से मुक्त तुम्हें करना होगा।
स्वतंत्रता की बलि–वेदी पर शीश तुम्हें धरना होगा।।
स्वेच्छाचारी निरंकुशों का गर्व तुम्हें हरना होगा।
याद रहे नूतन जीवन के लिए तुम्हें मरना होगा।।'' 5

नवयुग के विधायक **आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी जी** ने हिन्दी भाषा और साहित्य को निश्चित दिशा प्रदान किया और खड़ी बोली को व्याकरण के प्रतिमान पर स्थापित किया । उनके द्वारा संपादित सरस्वती पत्रिका परिनिष्ठित खड़ी बोली के माध्यम से राष्ट्रीय चेतना का संवाहक बनी। देशवासियों का आह्वान करते हुए लिखते हैं कि मनुष्य को भले ही ठीक से भोजन, वस्त्र और आवास न मिले लेकिन वह स्वतंत्र होना चाहिए। जहॉ परतंत्रता होती है वहॉ स्वर्ग का सुख भी सुखकर नहीं होता है। राष्ट्रीय चेतना से आप्लावित उनकी कविता की पंक्तियां दृष्टव्य है –

''न स्वर्ग भी सुखद, जहॉ परतंत्रता है, चाहे कुटी अति घने बन में बनावे।
चाहे बिना नमक कुत्सित अन्न खावे।।चाहे कभी नर नए पट भी न पावे।
सेवा प्रभो! पर न तू पर की करावे।।'' 6

नाथूराम शर्मा 'शंकर' आततायी अंग्रेजी शासन की अन्याय शोषण लूट और टैक्स की मार से बेहाल भारत के दीन हीन कृषकों के प्रति सहानुभूति व्यक्त करते हुए भगवान भोलेनाथ से उद्धार की याचना कर रहे हैं –

'' शिवशंकर तू यदि शंकर है। फिर क्यों विपरीत भयंकर है?

करतार उदार सुधार इसे, कर प्यार निहार, न मार इसे।।
घनघोर अमंगल राज रहा, भरपूर विरोध विराज रहा।
घर घेर दरिद्र दहाड़ रहा, मुख शोक महासुर फाड़ रहा।।
रिपु रूप कराल कुसंग हुआ, बस भारत का रस भंग हुआ।।'' 7

हिन्दी के प्रबल समर्थक,राष्ट्र पहरी और कुशल राजनीतिज्ञ **पुरूषोत्तम दास टंडन** के लिए राष्ट्र सर्वोपरि है। वे हिन्दी साहित्य सम्मेलन के सूत्रधार थे। उनका स्पष्ट मत था कि बिना भाषा को मजबूत किए स्वतंत्रता की नींव मजबूत नहीं हो सकती। राष्ट्रीय चेतना के सजग प्रहरी टण्डनजी लिखते हैं –

''हे स्वतंत्रता प्यारी तू क्यों हमको इतना बिसर गई।
भारत छोड़ किधर को भागी हमको इकला छोड़ गई।।
ईश्वर पुत्री जग की प्यारी गुण की आगर कहॉ गई।
हाय हाय कह रोवैं भारतवासी तेरा नाम लई।।'' 8

स्वाधीन आंदोलन के वीर सपूतों में परंतत्रता के पाश को तोड़ फेकने ज्वाला उनके ह्रदय में धधक रही थी। स्वतंत्रता की उत्कट अभिलाषा और सर्वस्व बलिदान का भाव सहज भाव से उनकी वाणी में अभिव्यक्ति पाने लगी। ओजस्वी कवि **माधव शुक्ल** का यह उद्‌गार है –

'' मेरी जां न रहे, मेरा सर न रहे, सामां न रहे, न ये साज रहे।
फकत हिन्द मेरा आजाद रहे माता के सर पर ताज रहे।।
सिख हिन्दू मुसलमां एक रहें भाई भाई सा रस्मोरिवाज रहे।
गुरू ग्रंथ कुरान पुरान रहे मेरी पूजा रहे औ नमाज रहे।।
माधो की है चाह खुदा की कसम मेरे बाद बफात ये वाज रहे।
गाढ़े का कफन हो मुझ पै पड़ा बन्दे मातरम् अलफाज रहे।।'' 9

दक्षिण अफ्रीका से गांधी जी का भारत लौटना मानो परतंत्रता पाश में बॅधे देशवासियों के लिए मुक्ति का संदेश था। गांधी जी स्वाधीनता आंदोलन को जन जन का आंदोलन बना दिया। सामाजिक कुरीतियों के विरूद्ध अभियान आरंभ किया। गांधी जी के स्वदेश वापसी पर राष्ट्रीय चेतना को मुखरित करने वाले अनेक कवियों ने प्रसन्नता के भाव कुछ इस तरह व्यक्त किए हैं –

'' आया मेरा लाल ,रत्न–धन मेरा आया,आया मेरा प्राण, आज मन मेरा आया।
जे स्वधर्म में धी निरंतर ही रहता है, कर्मवीर संसार सकल जिसको कहता है।
विपद काल में जो रहता ध्रुव सा निश्चल है,जिसमें हां भरपूर आज भी आत्मिक बल है।
मेरा प्यारा करमचन्द गांधी सुख पावे, दिन दूनी कर्त्तव्यशीलता वीर दिखावे।।'' 10

गांधी जी को भारत के राजनैतिक आकाश का दिवाकर बताते हुए उनके प्रति ऐसा ही भाव **'निश्चल'** जी ने भी इन पंक्तियों में व्यक्त किया है–

'' गर्वित है आज माता गांधी सा पुत्र पाकर। भारत के राजनैतिक आकाश का दिवाकर।।'' 11

'पै धन बिदेश चली जात यहै अति ख्वारी' कहकर भारतेंदु जी ने जिस चिंता की ओर देशवासियों का ध्यान वर्षों पहले आकृष्ट किया था, उससे त्राण पाने के लिए गांधी जी स्वदेशी आंदोलन को आर्थिक स्वावलंबन का मंत्र बताया। स्वदेशी आंदोलन का प्रमुख अस्त्र बना चरखा। चरखा सुदर्शन चक्र की भांति शत्रु दल पर काल बन कर चलने लगा। कविवर **पं.बंशीधर शुक्ल** चरखा द्वारा अहिंसात्मक क्रांति करने वाले बलिदानी टोली का वर्णन निम्नानुसार किया है –
''सिर बॉधे कफनवा हो राम, शहीदों की टोली निकली।
गांधी जी का शस्त्र अहिंसा सत्याग्रह संग्राम, चर्खा चक्र सुदर्शन छूटा मचा विश्व कोहराम
ब्रिटिश की ठिठोली निकली। सिर बॉधे कफनवा हो राम, शहीदों की टोली निकली।।'' 12
ऐसा ही भाव **'अख्तर' जी** ने भी व्यक्त किया है –
''बनो तुम कर्मयोगी न तुम कर्म छोड़ो, गुलामी की जंजीर चरखे से तोड़ो।।''

'' जिएँ तो स्वदेशी बदन पर बसन हो,मरें भी अगर तो स्वदेशी कफन हो।''13

प्रखर प्रबुद्ध ओजस्वी क्रांतिकारी नेता लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक जी का यह उद्घोष '' स्वतंत्रमा मेरा जन्मसिद्ध अधिकार है और उसे मैं लेकर रहूँगा'' देश के लाखों युवाओं के हृदय देश की आजादी के मर मिटने का जोश भर दिया। इसी क्रांतिकारी भाव को हिन्दी के कलमवीरों ने भी अपनी ओजस्वी लेखनी के द्वारा भर रहे थे। अंग्रेजी सत्ता के छल फरेब का पर्दाफास करते हुए 'आजादी या मौत' कविता में स्वामी नारायणानन्द सरस्वती' अख्तर जी लिखते हैं कि गुलामी में जीना न मरने से कम है –

''अबस जिन्दगी का गुमां है, भरम है।गुलामी में जीना न मरने से कम है।।
सितमगर ने हमको जो गफलत में पायातुरत दामे फितरत में अपने फंसाया।
कहा और कुछ और कुछ कर दिखाया। दिखा करके अमृत जहर को पिलाया।।''14

किसी भी राष्ट्र की आत्मा उसकी सभ्यता और संस्कृति बसती है। **मैथिलीशरण गुप्त जी** का संपूर्ण काव्य राष्ट्रीय चेतना की भावना एवं स्वदेशानुराग से ओतप्रोत है।'हे मातृभूमि तू सत्य ही सगुण मूर्ति सर्वेश की' कहकर मातृभूमि की आराधना की है। यही उनके लिए ईश्वरीय आराधना बन गई है। गुप्त जी प्रणीत 'भारत भारती' आत्म गौरव का काव्य है। इस महान कृति ने उन्हें र राष्ट कवि के शीर्ष आसन पर बिठा दिया। आत्म गौरव की रक्षा के लिए देश की जनमानस को संदेश देते हुए वे लिखते हैं –

'' हम कौन थे , क्या हो गये हैं और क्या होंगे अभी, आओ विचारें आज मिलकर ये समस्याएं सभी।।
लो अपना भाग शीघ्र ही कर्तव्य के मैदान में , हो बद्ध परिकर हो सहारा देश के उत्थान में।।
भूलो न ऋषि संतान हो,अब भी तुम्हें यदि ध्यान हो,तो विश्व को फिर भी तुम्हारी शक्ति का कुछ ज्ञान हो।।''15

'एक भारतीय आत्मा' से सुप्रसिद्ध श्री माखनलाल चतर्वेदी जी ओजपूर्ण भावों के ओजस्वी कवि एवं प्रखर संपादक थे। प्रभा और प्रताप जैसे प्रतिष्ठि पत्रों के संपादक के रूप में उन्होंने अंग्रेजी सरकार के विरूद्ध जोरदार प्रचार किया और देश के नौजवानों का आह्वान किया कि वह गुलामी की जंजीरों को तोड़ फेंक दे। वे सच्चे देश प्रेमी आजादी के आंदोलन के सक्रिय आंदोलनकारी थे। हिमकिरीटिनी, हिमतंरगिनी, माता , युगचरण, समर्पण आदि उनकी प्रमुख रचनाएँ हैं जिसने राष्ट्रीय चेतना की प्रखर धारा प्रवाहित हुई है।'' केन्द्रीय कारागार बिलासपुर में बंदी जीवन व्यतीत करते हुए उनकी द्वारा रचित 'पुष्प की अभिलाषा' कविता देश की युवाओं को देश की मुक्ति की लिए बलि पथ पथिक बना दिया–

''मुझे तोड़ लेना वनमाली उस पर देना तुम फेंक,
मातृभूमि पर शीश चढ़ाने जिस पथ जावें वीर अनेक।।'' 16
आततायी ब्रिटिश सरकार की पाशविकता का वर्णन करते हुए वे लिखते हैं–
''क्या देख न सकती जंजीरों का गहना?
हथकड़ियॉ क्यों? यह ब्रिटिश राज का गहना,
कोल्हू का चर्रक चूँ? जीवन की तान,
गिट्टी पर लिखे अंगुलियों ने क्या गान?
खाली करता हूँ ब्रिटिश अकड़ का कुऑ।।'' 17

स्वराज्य की प्राप्ति के लिए स्वातंत्र्य समर में बढ़चढ़ कर भाग लेने के कारण बहुत से कलमवीरों को बंदी बना लिया गया और उनकी रचनाएँ भी प्रेस एक्त के तहत प्रतिबंधित कर दी गई। मुक्त संगीत के रचनाकार **पं. अभिराम शर्मा** देश के वीर सपूतों का आह्वान करते कहते हैं कि जब तक क्रांति नहीं होगी तब तक हृदय को शांति नहीं मिलेगी–

''जब तक होती क्रांति नहीं है, तब तक उर में शांति नहीं है।
क्योंकि जननी की मुझे, अब रखनी है लाज।
लक्ष्च हमारा ध्रुव सा बनकर , कहता है यह आवाहन कर,
अभिराम आओ! आओ! ले लो अपना स्वराज।। '' 18

क्रांति की ज्वाला ज्यों ज्यों तेज होती गई त्यों त्यों आततायी ब्रिटिश सरकार की पाशविकता बढ़ती गई। अन्याय, शोषण, कठोर कारावास और सामूहिक फॉसी और मृत्युदण्ड के कई अमानुषिक तरीकों ने देश के मर्म का आहत कर दिया। चारों ओर पाशविकता के भयंकर दृश्य दिखाई दे रहे थे। क्रांतिकारी कवि **प्रहलाद पाण्डेय 'शशि'** ने पाशविकता के उन भयंकर दृश्यों को अपनी रचना में इस प्रकार शब्द चित्र खींचा है –

'' क्या क्या दिखला दूँ मैं तुमको, देख सको तो मानव! देखो।
अत्याचार दमन जुल्मों के लक्ष लक्ष घावों को देखो।
आज बिवाई फटे हुए उन,कटे हुए पॉवों को देखो।
लोहे के करघों पर लटकी, क्षीण तड़पती लाशें देखो।
खेतों मे मिट्टी से उठती, कंकालों की आहें देखो।।'' 19

गांधी जी के आह्वान पर देश के कई नौजवान आंदोलन के प्रवाह में बह चले। अंग्रेजी सरकार के विरूद्ध क्रांतिकारी गीत गाते हुए जगह जगह जुलूस निकाले गए। इससे बौखला कर ऐसे गीतों के रचनाकारों को कैद कर कालकोठरी की कठोर यातनाएँ दी गई तथा गीतों को पर प्रतिबंधित कर दिया गया। छैल बिहारी दीक्षित 'कंटक लिखते हैं '' मेर सम्मानित मित्र को आज भी यह शिकायत है कि मेरी एक कविता की बदौलत ही उन्हें एक साल की सजा काटनी पड़ी। उन्हें संतोष होना चाहिए कि इनके लिखने वाले ने उनसे कहीं ज्यादा जेल भोगी है। हिन्दी कवियों में अपनी लिखी कविताओं के लिए ही सजा भोगने वाला शायद मैं ही पहला व्यक्ति हूँ । मुझे इस पर गर्व है। '' **छैल बिहारी दीक्षित 'कंटक':** खून के छींटें : प्रकाशक – सूचना विभाग, उत्तर प्रदेश पृ.06 ' कण्टक 'जी आजादी की क्रांति के लिए युवाओं का आह्वान करते हुए लिखते हैं–

'' बिगुल बज गया सुनो हुशियार! जवानो ,हो जाओ तैयार।
छिड़ा है आजादी का जंग ,उठो फिर लेकर नई उमंग।
चलो मिल कोटि कोटि इक संग, देखकर दुश्मन होवे दंग।
तुमको ताक रहा संसार, जवानों, हो जाओ तैयार।।'' 20

आजादी रक्त मांगती है। क्रांतिकारी रचनाओं से प्रभावित होकर बलिदानियों की होड़ मच गई थी। वहीं ब्रिटिश शासन की चूलें हिलाने के लिए क्रांतिकारियों ने दमन का उत्तर जगह जगह विद्रोह कर तथा सरकारी व्यवस्था को क्षति पहुँचाकर दिया जाने लगा। काकोरी कांड के नायक **रामप्रसाद बिस्मिल** हॅसते हॅसते फांसी के फंदे पर झूल गए। क्रांतिकारी बिस्मिल जी का व्यक्तित्व एक क्रांतिकारी रचनाकार का भी रहा है। अपनी क्रांतिकारी रचनाओं के माध्यम से देश असंख्य युवाओं के दिलों में मातृभूमि की आजादी के लिए प्राणोत्सर्ग का भाव भर दिया। वे मातृभूमि की रक्षा के लिए सैकड़ो बाद जन्म लेकर मातृभूमि के लिए मरने की अभिलाषा करते हैं। उनकी पंक्तियॉ दृष्टव्य है –

''यदि देशहित मरना पड़े, मुझको सहस्त्रों बार भी,
तो भी न मैं इस क्लेश को निज ध्यान में लाउँ कभी।
हे ईश! भारत भूमि में शत बार मेरा जन्म हो,
कारण सदा ही मृत्यु का देशोपकारक कर्म हो।।'' 21

'पराधीन सपनेहु सुख नाही' अर्थात् पराधीनता की स्थिति में स्वप्न में भी सुख की प्राप्ति नहीं हो सकती है। जहॉ एक घड़ी की परवशता भी करोड़ों नरक के समान है, वहीं एक पल भर की स्वतंत्रता सैकड़ों स्वर्गों से भी उत्तम है । अतः जब तक शरीर में जीवन है तब तक देशहित धर्म का त्याग नही करना चाहिए। इन्हीं का संदेश आजादी के दीवानों को देतें हुए **रामनरेश त्रिपाठी जी** लिखते हैं–

'' एक घड़ी की भी परवशता कोटि नरक के सम है,
पल भर की भी स्वतंत्रता सौ स्वर्गों से उत्तम है।
जब तक जग में मान तुम्हारा , तब तक जीवन धारो,
जब तक जीवन है शरीर में , तब तक धर्म न हारो।। ''22

सन् 1920 से 1936 की कालावधि में हिन्दी साहित्याकाश में छायावाद का सूर्य चमक रहा रहा था। इस कालावधि में संपूर्ण राष्ट्र स्वातंत्र्य संघर्स की कठिनतम घड़ियों से गुजर रहा था। अतः छायावादी कवियों से अक्सर

यह शिकायत की गई कि ऐसे कठिन समय में समाज और राष्ट्र से मुंह फेरकर सौंदर्य के कल्पना लोक में विचर रहे हैं। किंतु गहराई से देखने पर यह आरोप निराधार ही सिद्ध होगी। भारत के अतीत गौरव के प्रति अनुराग और वर्तमान दुरवस्था के प्रति क्षोभ के भाव इनकी रचनाओं में समानांतर देखने को मिलती है। इसका सशक्त उदाहरण के रूप में **प्रसाद जी** की इन पंक्तियों में देखा जा सकता है जिसमें वे देश के वीर नौजवानों को बलिदान के पुण्य पथ पर प्रशस्त होने प्रेरित कर रहे हैं –'' हिमाद्रि तुंग श्रृंग से प्रबुद्ध शुद्ध भारती, स्वयं प्रभा समुज्ज्वला, स्वतंत्रता पुकारती।
अमर्त्य वीर पुत्र हो दृढ़ प्रतिज्ञ सोच लो, प्रशस्त पुण्य पंथ है बढ़े चलो बढ़े चलो।।'' 23

यही भाव **निराला जी** की निम्न पंक्तियों में अवलोकनीय है –
'' तुम हो महान, तुम सदा ही महान,
है नश्वर यह दीन भाव ,कायरता, कामपरता,
ब्रह्म हो तुम, पद रज भर भी है नहीं ,
पूरा यह विश्व भार,जागो फिर एक बार।।''24
बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' जी की इन पंक्तियों में यही भाव दृष्टव्य है –
'' छोड़ो निद्रा लो अंगड़ाई, आज श्रृंखलाएँ तोड़ो,
आज मुक्ति की होड़ दौड़ में, आओ तुम भी तो दौड़ो।
तोड़ो इस शोषण की दाढ़े, अब सम्मुख है विकट समर ,
सुनो सुनो ओ सोने वालों , जागृति के भीषण स्वर।।'' 25
इसी प्रकार के क्रांतिकारी बलिदानी भाव को देश युवाओं में हृदय में भरने की प्रार्थना मृत्यंजय महाकाल से **सियारामशरण गुप्त जी** कर रहे हैं–

''मृत्युंजय , इस घर में अपना काल कूट भर दे तू आज,
ओ मंगलमय , पूर्ण सदाशिव, रूद्र रूप धर ले तू आज।
चिर निद्रित भी जाग उठे हम, कर दे तू ऐसी हुंकार,
मदमत्तों का मद उतार दे, दुर्धर हो तेरा प्रहार।।'' 26

आततायी ब्रिटिश शासन की शोषण वृत्ति के कारण विश्वभर में सोने की चिडिया कही जाने वाली गीता ज्ञान प्रकाशिनी भारत माता की तीस संतान अत्यंत विपन्न और दयनीय जीवन व्यतीत करने विवश हो गई। ग्रामवासिनी भारत माता नतमस्तक हो तरूतल निवासिनी और अपने घर में प्रवासिनी बनकर रह गई है। शब्द शिल्पी सुमित्रानंदन पंतजी ने भारत माता की शोषणजनित दुरवस्था का हृदय विदारक चित्र अंकित निम्न पंक्तियों में किया है –

'' भारत माता ग्रामवासिनी,
तीस कोटि संतान नग्न तन , अर्द्ध क्षुधित, शोषित, निरस्त्र जन,
मूढ़, असभ्य, अशिक्षित, निर्धन,
नतमस्तक तरूतल निवासिनी।। ''27

कवियत्री सुभद्रा कुमारी चौहान द्वारा रचित 'झांसी की रानी' कविता की पंक्तियों देश अबाल वृद्ध की जुबान बसी हुई थी। 'झांसी की रानी की वीरता का बखान कर देशवासियों को ब्रितानी सरकार को उखाड़ फेकने के लिए उद्वेलित किया। देश की सोई हुई वीरता और पौरूष जाग उठी। भारतवासियों को अपनी गुमी हुई आजादी की कीमत की पहचान करा दी –

'' सिंहासन हिल उठे, राजवंशों ने भृकुटी तानी थी
,बूढे भारत में भी आयी फिर से नयी जवानी थी,
गुमी हुई आजादी की कीमत सबने पहचानी थी,
दूर फिरंगी को करने सबने मन में ठानी थी,
चमक उठी सन सत्तावन में ,वह तलवार पुरानी थी।

बुन्देले हरबोलो के मुंह हमने सुनी कहानी थी।
खूब लड़ी मर्दानी वह तो झांसी वाली रानी थी।।'' 28

कवियों की ओजस्वी वाणी से देश में राष्ट्रीय चेतना का ऐसा ज्वार उमड़ आया कि भारतवासियों में बलि पथ पर आगे बढ़कर अपना सर्वस्व समर्पण करने की होड़ सी मच गई। कविवर पं. सोहनलाल द्विवेदी जी की निम्न पंक्तियां दृष्टव्य है –

'' वंदना के इन स्वरों में एक स्वर मेरा मिला लो।
बंदिनी मां को न भूलो, राग में जब मत्त झूलो,
अर्चना के रत्न कण में एक कण मेरा मिला ला।
जब हृदय का तार बोले, शृंखला के बंद खोले,
हों जहां बलि शीश अगणित, एक सिर मेरा मिला लो।।''29

निष्कर्षः

राष्ट्रीय जागरण के यज्ञ समिधा में अपनी ओजस्वी वाणी की आहुति डालने में हिन्दी कवियों का महत्त्वपूर्ण स्थान रहा। प्रस्तुत शोध आलेख में कुछ ही कवियों नाम बानगी के तौर पर आए हैं। ऐसे अनेक कलमवीन हुए जिनकी रचनाएं ब्रितानी सरकार द्वारा बंदी बना ली गई । कलमवीरों को अपने दुर्धर्ष लेखनी के कारण काल कोठरी की कठोर यातनाएं झेलनी पड़ी। निश्चय ही ऐसे कलमवीरों और उनकी रचनाओं का सही मुल्यांकन नहीं हो सका है फलतः वे दोनों गुमनामी के अँधेरे में खो गए। काव्यालोचकों और इतिहासकारों की सम्यक दृष्टि इन पर नहीं पड़ी । आधुनिक हिन्दी की विकास यात्रा में भारतेंदु युग से राष्ट्रीयता चेतना मूल स्वर के रूप में मुखरित हुआ वह क्रमशः तीव्रतर होता गया। ये कविताएँ राष्ट्र के मंगल कामना का पवित्र संदेश लेकर आयी और भारतीय जन मानस को मुक्ति आकांक्षा से भर दिया। मुक्ति की आकांक्षा ने ही उन्हें बलिपंथी बनाया। अंततः ये बलिपंथी स्वातंत्र्य के मंदिर में तक पहुंचने में 15 अगस्त1947 को सफल हो सके। निश्चय ही भारत के स्वातंत्र्य समर में हिन्दी कवियों की भूमिका को विस्मृत नहीं किया जा सकता। स्वतंत्र भारतवासी इन कवियों के प्रति सदैव कृतज्ञ रहेगा।

संदर्भ सूची :

1. भारतेन्दु हरिश्चंद्र 1 चर्चित राष्ट्रीय गीत : नरेश चंद्र चतुर्वेदी पृष्ठ 38–39(भारत दुर्दशा, सन 1880)
2. प्रताप नारायण मिश्रः आजादी के तराने खंड 2 पृष्ठ 21
3. बद्रीनारायण चौधरी 'प्रेमघन'चर्चित राष्ट्रीय गीत : नरेश चंद्र चतुर्वेदी पृष्ठ 40–41(प्रेमघन सर्वस्व,)
4. श्रीधर पाठक :चर्चित राष्ट्रीय गीत :नरेश चंद्र चतुर्वेदी पृष्ठ 55(भारत गीत,)
5. बलभद्र प्रसाद गुप्त विशारद 'रसिक' :(खून के छींटे) प्रतिबंधित हिंदी साहित्य भाग संपादकः रूस्तम राय2 पृ. 38–39''
6. महावीर प्रसाद द्विवेदीः चर्चित राष्ट्रीय गीत :नरेश चंद्र चतुर्वेदी पृष्ठ 62 सरस्वती सितंबर 1902
7. नाथूराम शर्मा 'शंकर':चर्चित राष्ट्रीय गीत :नरेश चंद्र चतुर्वेदी पृष्ठ 57(शंकर सर्वस्व सरस्वती, अपैल, 1909)
8. पुरूषोत्तम दास टंडनः चर्चित राष्ट्रीय गीत :नरेश चंद्र चतुर्वेदी पृष्ठ 69
9. माधव शुक्लः अभिलाषाः राष्ट्रीय सिंहनाद,सन 1922 चर्चित राष्ट्रीय गीत :नरेश चंद्र चतुर्वेदी पृष्ठ 82
10. गया प्रसाद शुक्ल 'त्रिशूल': त्रिशूल तरंगः चर्चित राष्ट्रीय गीत :नरेश चंद्र चतुर्वेदी पृष्ठ 101
11. निश्चलः चर्चित राष्ट्रीय गीत :नरेश चंद्र चतुर्वेदी : भाग एक पृष्ठ 13
12. बंशीधर शुक्लः स्वतंत्रता आंदोलन के गीत : संकलनः देवेश चन्द्र पृ.22
13. स्वामी नारायणानन्द सरस्वती' अख्तर':स्वदेशी गानः आजादी के तराने खंड 2 पृष्ठ 312
14. स्वामी नारायणानन्द सरस्वती' अख्तर': आजादी या मौतः चर्चित राष्ट्रीय गीत :नरेश चंद्र चतुर्वेदी पृष्ठ 118
15. मैथिलीशरण गुप्तः भारत भारतीः चर्चित राष्ट्रीय गीत :नरेश चंद्र चतुर्वेदी पृष्ठ 138
16. माखनलाल चतुर्वेदीः एक फूल की चाहः चर्चित राष्ट्रीय गीत :नरेश चंद्र चतुर्वेदी पृष्ठ 151
17. माखनलाल चतुर्वेदीः कैदी और कोकिलाः चर्चित राष्ट्रीय गीत :नरेश चंद्र चतुर्वेदी पृष्ठ 148

18. अभिराम शर्माः मुक्त संगीत': प्रतिबंधित हिंदी साहित्य भाग 2 : संपादकः रूस्तम राय पृ. 89
19. प्रहलाद पाण्डेय 'शशि' प्रतिबंधित हिंदी साहित्य भाग 2 : संपादकः रूस्तम राय पृ. 151
20. छैल बिहारी दीक्षित 'कंटक': आजादी का बिगुलः खून के छींटें : प्रकाशक – सूचना विभाग, उत्तर प्रदेश पृ.13
21. रामप्रसाद बिस्मिलः सरफरोशी की तमन्नाः भाग 1 पृ. 41
22. रामनरेश त्रिपाठीः पथिक : चर्चित राष्ट्रीय गीत :नरेश चंद्र चतुर्वेदी पृष्ठ 174
23. जयशंकर प्रसादः स्वतंत्रता पुकारतीः चर्चित राष्ट्रीय गीत :नरेश चंद्र चतुर्वेदी पृष्ठ 182
24. सूर्यकान्त त्रिपाठी निरालाः जागो फिर एक बारः चर्चित राष्ट्रीय गीत भाग 2ः संपादक नरेश चंद्र चतुर्वेदी पृष्ठ 16
25. बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' चर्चित राष्ट्रीय गीत : संपादक नरेश चंद्र चतुर्वेदी पृष्ठ 244 (केंद्रीय कारागार1943)
26. सियारामशरण गुप्तः शंखनादः चर्चित राष्ट्रीय गीत : संपादक नरेश चंद्र चतुर्वेदी पृष्ठ 205
27. सुमित्रानंदन पंतः भारत माताः चर्चित राष्ट्रीय गीत : भाग 2ःसंपादक नरेश चंद्र चतुर्वेदी पृष्ठ17
28. सुभद्रा कुमारी चौहानः झांसी की रानीः चर्चित राष्ट्रीय गीत : भाग 2ःसंपादक नरेश चंद्र चतुर्वेदी पृष्ठ87
29. सोहनलाल द्विवेदीः चर्चित राष्ट्रीय गीत : भाग 2ःसंपादक नरेश चंद्र चतुर्वेदी पृष्ठ 94